वर्ष—2023

32 PAGES ANSWER BOOK

विषय Subject : हिन्दी

विषय कोड Subject Code : 051

परीक्षा की दिनांक/Date of Exam : 020323

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : हिन्दी

प्रश्न पत्र का सेट
Set of the Question paper : C

गोले भरने हेतु उदाहरण :–
सही तरीका :–
● ○ ○ ○
गलत तरीका :–
⊗ ⊘ ○ ◐ ◉ ○

नोट :–
इस शीट को भरने के पूर्व इस पृष्ठ के पीछे दिए गए उदाहरण को देखें।

ID NO. 6173050
SUB. 051 - HINDI
Bag. 20511256
5

केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठ

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्त ... प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	
27	
28	

www.oddyindia.com
Oddy
99.1mm x 33.9mm x 16
Laser, Inkjet & Copier Label ST-16 A4
ST-16 A4

मुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरावे ↓

→ प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नंबर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं ...	परीक्षक हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
अशोक कुमार दुबे ...	अजय कुमार राय ... परीक्षक क्र.- 23071

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक -1 का उत्तर क्रमांक -1

(i) (ब) नाभिक।

(ii) (स) शब्दालंकार।

(iii) (अ) चार कालों में।

(iv) (द) कपड़े पहनाती है।

(v) (स) पैसे।

(vi) (अ) दत्ता जी राव के यहाँ।

BSE

प्रश्न क्रमांक -2 का उ० → (2)

(i) सरल वाक्य।

(ii) मात्रिक।

(iii) लेखक।

(iv) नौ वर्ष की उम्र।

(v) भूषण।

(vi) कागज के पन्ने से।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(vii) बिड़ला मंदिर।

प्रश्न क्रमांक -(3) का उ०-(3)

(क)		(ख)
(i) चौपाई छंद	—	16 मात्राएँ
(ii) चित्रकार	—	चितेरा
(iii) सम्पादकीय पृष्ठ	—	अखबार की अपनी आवाज
(iv) हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग	—	भक्तिकाल
(v) छायावाद के प्रवर्तक कवि	—	जयशंकर प्रसाद
(vi) मस्ती का सन्देश	—	हरिवंशराय बच्चन

B
S
E

प्रश्न क्रमांक -(4) का उ०-(4)

(i) रेडियोनाटकों में पात्रों की पहचान 'संवादों' अर्थात् उनके द्वारा बोले गए कथनों के माध्यम से की जाती है।

(ii) खजूर और अंगूर।

(iii) लुट्टन पहलवान की ढोलक की आवाज।

(iv) 'चन्द्रगुप्त' छायावाद के प्रवर्तक कवि 'जयशंकर प्रसाद' की नाट्य रचना है।

प्रश्न क.

(v) कवि ने स्लेट पर लाल खड़िया मलने की बात कही है।

(vi) दोहा छंद का।

(vii) मुहावरा।

प्रश्न क्रमांक -(5) का उ०-(5)

(क) (i) सत्य।

(ii) असत्य।

(iii) सत्य।

(iv) सत्य।

(v) असत्य।

(vi) सत्य।

प्रश्न क्रमांक-(6) का उ०-(6)

लेखक के पिता, आनन्द को पाठशाला भेजने के लिए तैयार हो गए परंतु उन्होंने उसके लिए कई शर्तें रखी जो इस प्रकार है-

(i) सुबह विद्यालय जाने से ग्यारह बजे तक खेत में काम करना होगा तथा पानी लगाना होगा तथा वहीं से सीधे विद्यालय जाना होगा।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र

ii) विद्यालय से लौटने के पश्चात घर मे बस्ता रखकर घण्टा भर ढोर चराना होगा।

iii) यदि किसी दिन खेत में ज्यादा काम हो तो उस दिन विद्यालय से अवकाश लेना होगा।

पाठ का नाम - 'जूझ'
लेखक का नाम - 'आनन्द यादव'

प्रश्नक्रमांक -(4) का उत्तर (1)

B
S
E

नए और अप्रत्याशित विषय :- ऐसे विषय जिनमें लिखने की कभी आशा न की गई हो ऐसे विषय नये और अप्रत्याशित कहलाते हैं। नए और अप्रत्याशित विषयों मे लेखन कार्य करने से छात्रों मे निम्न गुण विकसित होते हैं -

i) नए और अप्रत्याशित विषयों मे लेखने से छात्रों में तर्कशीलता का गुण विकसित होता है

छात्रों मे मौलिक अभिव्यक्ति का गुण विकसित होता है।

iii) नए और अप्रत्याशित विषयों में लेखन से छात्र कम समय मे अपने विचार सुसंगठित रूप से व्यक्त करना सीखते हैं

iv) नए और अप्रत्याशित विषयों के लेखने से छात्रों का बुद्धि कौशल बढ़ जाता है

कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्र क्र.

प्रश्न क्रमांक -(8) का उत्तर(B)
(अथवा)

संदेह अलंकार :- जहाँ रूप, रंग और गुण में समानता के कारण किसी वस्तु को देखकर यह निश्चय न हो कि 'यह वही वस्तु है' वहाँ संदेह अलंकार होता है। अर्थात् जब किसी समानता के कारण उपमेय में उपमान का संदेह हो जाता है वहाँ संदेह अलंकार होता है। संदेह अलंकार में अनिश्चय की स्थिति बनी रही रहती है।

उदाहरण :-

"सारी बीच नारी है कि, नारी बीच सारी है।
सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है॥"

यहाँ सारी और नारी के बीच संदेह है।

प्रश्न क्रमांक -(9) का उत्तर(A)

कवित्त छंद :- यह एक वार्णिक छंद है इसमें चार चरण होते है प्रत्येक चरण मे 31 वर्ण होते है 16-15 वर्णों पर यति होती है। प्रत्येक चरण का अंतिम वर्ण गुरू (S) होता है

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० 7

"ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी,
ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।
कंदमूल भोग करें, कंदमूल भोग करें.
तीन बेर खाती ते वे, तीन बेर खाती हैं।
भूषन सिथिल अंग, भूषन सिथिल अंग,
विजन डुलाती ते वें, विजन डुलाती हैं।
भूषन भनत सिवराज वीर तेरे त्रास,
नगन जड़ाती ते वें, नगन जड़ाती हैं।"

प्रश्न क्रमांक – (10) का उत्तर (10)

तकनीकी शब्द :- "तकनीकी" शब्द अंग्रेजी के "Technical (टेक्नीकल)" शब्द का हिन्दी पर्याय है जिसका अर्थ है कार्य करने की शैली।

अर्थात् "तकनीकी शब्द वे शब्द हैं जिनका उपयोग किसी निर्मित अथवा खोजी गई वस्तु पर विचार व्यक्त करने के लिए किया जाता है अथवा मुख्य रूप से उस विषय विशेष की जानकारी (पर्याय) के लिए किया जाता है" तकनीकी शब्द कहलाते हैं।

जैसे:- (i) गुरुत्वाकर्षण (Gravity)
(ii) जनसंख्या (Population)
(iii) न्यायालय (Court) आदि।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रा क्र.

प्रश्नक्रमांक (11) का उत्तर (11)

(अथवा)

(i) क्या लता गा रही है?

(ii) आदमी का हवा में उड़ना सरल नहीं है।

प्रश्न क्रमांक (12) का उत्तर (12)

कवि (उमाशंकर जोशी) कवि कर्म को कृषि कर्म की तरह मानते है। वे कहते हैं कि उन्होंने अपने कागज रूपी चौकोर खेत में भावना के आवेग (अर्थात भावना रूपी आँधी) के आने से 'विचार' रूपी बीज बोया है जिसमें कल्पना व रसिकता की खाद मिलने शब्द रूपी अंकुर फुटते है और सुन्दर कृति (काव्यरचना) का निर्माण होता है।

अर्थात कवि ने अपने खेत में 'विचार' रूपी बीज बोया है।

पाठ का नाम - छोटा मेरा खेत
कवि का नाम - (उमाशंकर जोशी)
हिन्दी अनुवादक का नाम - रघुवीर चौधरी

www.oddyindia.com

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक -(13) का उत्तर(13)]
(अथवा)

लक्ष्मण, मेघनाद द्वारा छोड़ी शक्ति के प्रहार से अचेतन (बेहोश) हो गए, उनके उपचार के लिए वैद्यराज सुषेन ने संजीवनी औषधि की माँग की। संजीवनी औषधि हिमालय पर्वतों पर प्राप्त होती थी। अतः संजीवनी बूटी (औषधि) लाने के लिए हनुमान (पवनसुत) गए थे।

[पाठ - 'लक्ष्मण मूर्च्छा, राम विलाप'
रचयिता - तुलसीदास]

[प्रश्न क्रमांक - (15) का उत्तर(15)]
(अथवा)

महादेवी वर्मा ने स्वयं व भक्तिन के मध्य के 'सेवकस्वामी' के संबद्ध को नकारा है क्योंकि भक्तिन सच्चे सेवक धर्म के बावजूद, वह कई मामलों में वाक्चातुर्य को प्रकट करती और लेखिका के आदेशों को टालदेती थी जैसे जब लेखिका ने महादेवी को गाँव जाने के लिए कहा तो वह टाल देती थी और वह स्वयं को न बदलकर लेखिका को अपने अनुरूप बदलने का प्रयास करती थी। इसलिए महादेवी के वर्मा ने इस संबद्ध को नकारा है।

[पाठ का नाम - भक्तिन
लेखिका - महादेवी वर्मा]

B S E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

न क्र.

| प्रश्न क्रमांक -(6) का उत्तर (6) |

'फणीश्वर नाथ रेणु'

दो रचनाएँ :- (i) कहानी - पहलवान की ढोलक, ठेस

(ii) उपन्यास - मैला आँचल

भाषा :- फणीश्वर नाथ रेणु जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध भाषा का प्रयोग किया है इनकी रचनाओं में ग्रामीण पुट देखने को मिलता है इन्होंने सीधी, सरल, प्रवाह पूर्ण भाषा तथा देशज शब्द, मुहावरों व क्षेत्रीय शब्दों का रोचक ढंग से प्रयोग किया है
आपकी भाषा अत्यंत बोधगम्य प्रवाह पूर्ण व सरल है मुहावरों व लोकोक्तियों के प्रयोग से आपकी भाषा मे सजीवता आ गयी है
आपकी भाषा मे ग्रामीण आंचलिकता के कारण पात्र भी ग्रामीण (अशिक्षित) है अतः संवाद भी ग्रामीण भाषा मे है आपकी भाषा अत्यंत रोचक व मनोरम है

शैली :- आपने अपनी रचनाओं मे 'हिन्दी गद्य की विभिन्न शैलियों जैसे - वर्णात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, विवेचनात्मक शैली भावात्मक शैली, आंचलिक शैली तथा हास्य व्यंग शैली के प्रयोग से रचनाओं मे आनन्द व

www.oddyindia.com

प्रश्न क्र.

रोचकता बढ़ गयी है
आपकी शैली अत्यंत आकर्षक व रोचक है|

साहित्य में स्थान :– हिन्दी साहित्य मे आप आंचलिक विधा के प्रणेता के रूप मे सदैव याद किये जाएगे आपकी कृतियाँ वियुता की परिचायक है आपका योगदान हिन्दी साहित्य में अविस्मरणीय है| आपको हिन्दी सदैव याद किया जाएगा|

|प्रश्न क्रमांक-(18) का उत्तर (18)| (अथवा)

B
S (क) शीर्षक :– 'जीवन मे हास्य-व्यंग का महत्व'
E (ख) हास्य-व्यंग नीरस जीवन को सुखद बना देता है|

(ग) सार :– जीवन अनेक दुःखो, कष्टो, संघर्षों से भरा पड़ा है अतः ऐसे जीवन जिस मनुष्य ने कभी हँसना नहीं सीखा उसका जीवन दूभर (व्यर्थ) है अतः हास्य व्यंग एक ऐसा माध्यम है जो नीरस जीवन को सुखमय बना देता है अतः हमें सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिए हँसना सीखना होगा|

12 के अंक   कुल अंक

मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्र. क्र.

| प्रश्न क्रमांक (19) का उत्तर (19) |

—! हरिवंशराय 'बच्चन' :—

(1) दो रचनाएँ :— (1) काव्य संग्रह :— मधुशाला, मधुकलश मधुबाला

(11) आत्मकथा :— क्या भूलूँ क्या याद करूँ

(111) डायरी :— प्रवासी की डायरी

B S E

भाव पक्ष :—

(1) रहस्यवादिता :— वैसे तो 'बच्चन' जी हालावादी कवि है लेकिन उनकी रचनाओं मे रहस्यभावना स्पष्ट दृष्टिगोचर है वह चिन्तन प्रधान रचना करके रहस्य के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त करते है

(2) हालावादी दर्शन :— हरिवंशराय बच्चन हालावाद के जनक है उनकी रचनाओं में हालावाद के दर्शन होते है

(3) ~~श्रंग~~ श्रृंगारिकता :— हरिवंशराय बच्चन जी ने अपनी सभी रचनाओं मे श्रृंगार रस का अत्यंत प्रवाह पूर्ण प्रयोग किया उनका मन संयोग श्रृंगार की बजाय वियोग मे अधिक रमा है

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र

प) प्रेम सौन्दर्य :- हरिवंशराय बच्चन जी ने अपनी रचनाओं मे प्रेमादर्शनो का अंकन क्या है।

(5 व्यैक्तिकता :- बच्चन जी सामाजिक भावनाओं की बजाय व्यक्तिगत भावना को अत्यधिक महत्व देते है।

ला पक्ष :-

शैली :- आपकी भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है आपने अपनी रचनाओं हिन्दी के अलावा संस्कृत के तत्सम, उर्दू, व फारसी के शब्दो का प्रयोग किया है व आपने अपनी रचनाएँ प्रांजल शैली में व्यक्त की है।

(। अलंकारिकता :- आपने शब्दालंकार, अर्थालंकार व उभयालंकार इसके अलावा रूपक व मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया है।

(। रसयोजना :- आपने अपनी रचनाओ मे विभिन्न रसो, श्रृंगार (संयोग, वियोग), करुण रस का प्रयोग किया है।

साहित्य मे स्थान :- आपका हिन्दी साहित्य मे अपूर्व योगदान है आप हालावाद के प्रणेता [redacted] आपकी रचनाओ से प्रेमदर्शनो का अंकन हुआ है आपका हिन्दी साहित्य में स्थान अविस्मरणीय है।

BSE

कुल अंक
BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL
प्रश्न क्र

प्रश्न क्रमांक - (20) का उत्तर (ब)

संकेत - एक बार ----- को चुनौती देते हैं

सदर्भ ! - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ~~के~~ आरोह भाग (2) के पाठ 'पहलवान की ढोलक' से अवतरित है इसके रचयिता फणीश्वर नाथ रेणु' जी हैं

प्रसंग ! - ढोलक की आवाज से प्रेरित होकर पहलवान के जोश का वर्णन किया गया है

व्याख्या ! - यहाँ लेखक पहलवान के जोश का वर्णन करते हुये कहते हैं कि पहलवान एक श्यामनगर के मेले में गया वहाँ वह पहलवानों को कुश्ती देखकर ~~अत्यन्त~~ आनंदित हो गया और उनके दाँव पेंच देखकर उसे नही रहा गया और वह ढोलक की आवाज की प्रेरक ध्वनि से प्रेरित होकर जवानी की मस्ती में उसने बिना सोच-समझकर '~~शेर~~ दंगल में 'शेर के बच्चे' (चाँद सिंह) को चुनौती दे दी

विशेष ! - (i) पहलवान के जोश का वर्णन किया गया है

(ii) शुद्ध साहित्यिक खड़ी भाषा का प्रयोग किया है

(iii) भाषा सरल, सहज व प्रवाहपूर्ण है

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

मध्यप्रदेश

प्रश्न 3.

BSE

प्रश्न क्रमांक - (21) का उत्तर (21)

सेवा में,
जिलाधीश महोदय,
जिला :- छतरपुर (म०प्र०),

विषय - ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबंध लगाने हेतु प्रार्थना पत्र,

श्री मान,
सेवा में सविनय निवेदन है कि मैं ~~परीक्षा~~ कक्षा 12 वीं का छात्र हूँ मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि बोर्ड परीक्षाओं का समय अत्यंत निकट है। ऐसे मे कई लोग, शहर के विभिन्न इलाकों में ध्वनि विस्तारक यंत्र बहुत तेज आवाज में बजाते है। इससे मे पढ़ाई मे ध्यान एकाग्रचित करने मे व्यवधान उत्पन्न होता है।
अतः श्री मान जी से निवेदन है कि बोर्ड परीक्षाओं के पूर्ण होने तक ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर प्रतिबंध लगाने की कृपा करें, तो आपकी अति कृपा होगी।

भवदीय
नाम - अ.ब.स.
कक्षा - 12 वीं
दिनांक - 2 मार्च 2023
धन्यवाद

कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र

|प्रश्न क्रमांक - (23) का उत्तर (23)|

संकेत - सबसे तेज बौछारें .... झुंड को।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-२ के पाठ 'पतंग' से लिया गया है इसे रचयिता 'आलोक धन्वा'

प्रसंग :- कवि आलोक धन्वा ने प्रतीको व बिम्बों का प्रयोग करके सूर्योदय व बालसुलभ चेष्टाओं का अंकन किया है।

B
S
E

व्याख्या :- कवि धन्वा जी कहते है घनघोर वर्षा का भादो मास बीत जाने के बाद शरद ऋतु का आगमन हुआ है
शरद ऋतु का सूर्योदय खरगोश की आँखो जैसा लाल दिखाई दे रहा है शरद ऋतु का आगमन पुलो को पार करके हुआ है
शरद ऋतु का मौसम इतना मनमोहक होता है कि बच्चे साइकिल चलाते हुये घंटी-बजाकर इशारो से अपने मित्रो को बुलाकर पतंग उड़ाने के लिए बुलाते है अतः शरद ऋतु बच्चों के लिए उमंग उत्साह, व जोश लेकर आती है

काव्य सौन्दर्य - (i) जोर-जोर में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग किया है
(ii) खरगोश की आँखों जैसा लाल" में उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है
(iii) भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है

MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - (22) का उत्तर (22)

पर्यावरण की सुरक्षा

~~प्रस्तावना :- 'पर्यावरण' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। परि+ आवरण अर्थात वह आवरण जो हमें चारो तरफ से घेरे हुये है पर्यावरण कहलाता है प्रकृति ने मानव की गोद में~~

पर्यावरण की सुरक्षा :-

रूप रेखा :- (1) प्रस्तावना
(2) पर्यावरण की सुरक्षा की क्यों आवश्यकता है।
(3) ~~सुरक्षि~~ क्षति पहुँचाने के कारण
(4) सुरक्षित करने के उपाय
(5) उपसंहार

प्रस्तावना :- पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। परि+ आवरण अर्थात् वह आवरण ~~का~~ जो हमें चारो तरफ से घेरे हुये है पर्यावरण कहलाता है प्रकृति ने मानव की गोद में न जाने कितने संसाधन दिये हैं परंतु ये संसाधन ~~मानवीय~~ मानवीय क्रियाकलापों के कारण नष्ट हो रहे हैं इससे हमारा पर्यावरण ~~का~~ क्षतिग्र हो रहा है और वह प्रदूषित हो रहा है

पर्यावरण सुरक्षा की क्यों आवश्यकता है - आजकल मानवीय ~~गतिवि~~ गतिविधियो के द्वारा पर्यावरण के घटकों जैसे जल, वायु, भूमि प्रदूषित हो रहे हैं। और नष्ट हो रहे हैं

प्रश्न क्र.

यदि इनकी सुरक्षा न की गई तो जनजीवन संकट में पड़ जाएगा अतः जीवन को बचाने के लिए इसकी सुरक्षा आवश्यक है।

(iii) क्षति पहुँचाने के कारण :- आज आधुनिकीकरण व वैज्ञानिक विकास के कारण मानव की आवश्यकताएँ बढ़ गयी हैं जिससे उद्योगों व फैक्टरियों का विकास हो गया है। उद्योगों के विकास से जहरीला धुआँ, जल व रसायन वायु, जल व भूमि को गंदा कर रहे हैं जिससे कई तरह की समस्याएँ यथा- बीमारी पैदा हो रही है। अतः पर्यावरण को क्षति पहुँचाने का मुख्य कारण औद्योगिकीकरण है।

(iv) सुरक्षित करने के उपाय :- पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए हमें अपनी आवश्यकताओं को सीमित करना होगा व संसाधनों का समुचित ढंग से उपयोग करना होगा तभी हम पर्यावरण को सुरक्षित कर सकेंगे।

(v) उपसंहार :- आज बढ़ती जनसंख्या व उनकी आवश्यकताओं के कारण पर्यावरण का क्षति होना जारी है। ऐसे में सरकार द्वारा कई योजनाएँ चलायी गई हैं ताकि पर्यावरण को सुरक्षित किया जा सके। हमें भी सरकार का कदम से कदम मिलाकर साथ देना चाहिए तभी हम भावी पीढ़ी को

प्रश्न क्र

स्वच्छ, ~~निर्म~~ निर्मल व प्रदूषण रहित वातावरण प्रदान कर पायेंगे।
अतः पर्यावरण सुरक्षा की नितान्त आवश्यकता है।

मानव पर बढ़ रहा है, सतत प्रदूषण भार। ~~मनुज अ~~
मनुज अचेतन हो रहा है, कैसे हो उद्धार॥"

[प्रश्न क्रमांक - (17) का उत्तर]

क्रिकेट के खेल विषय पर दो मित्रों का संवाद:-

B
S
E

अनिल :- मित्र सुरेश। आज, मेरा क्रिकेट खेलने का बहुत मन है।

सुरेश - मेरा भी। अनिल।

अनिल - तो, फिर चलो, खेलते हैं।

सुरेश - कहाँ खेलेंगे?

अनिल - मेरे विद्यालय के मैदान में।

सुरेश - कोई मना तो नहीं करेगा? वहाँ खेलने के लिए

अनिल - मैंने मेरे प्रधानाचार्य से अनुमति लेली है।

सुरेश - ~~ठ~~ अनिल, तुम पाँच अपने मित्र खेलने के लिए ले आना। बाकी प्रबन्ध मैं स्वयं कर लूँगा।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्र क्र.

अनिल – मैं अपने विद्यालय की क्रिकेट टीम का कप्तान हूँ, मेरा विद्यालय सदैव खेल प्रतियोगिता में प्रथम रहता है।

सुरेश! – मेरी विद्यालय की टीम भी बहुत आगे है।

अनिल! – तो फिर शाम चार बजे क्रिकेट खेलने के लिए मिलते हैं।

सुरेश! – हाँ! मैं बहुत उत्साहित हूँ।

अनिल – और, मैं भी! बहुत मजा आयेगा।

सुरेश – हाँ।

प्रश्न क्रमांक–(५) का उत्तर (५)

जब जेब भरी होती है और मन खाली होता है अर्थात् मन में किसी वस्तु के लिए ~~महत्व~~ निश्चय नहीं होती है और वह बाजार के आकर्षण में फंसकर बिना जरूरत की ~~सा~~ वस्तुएँ खरीद लेता है और अपने पैसे की गर्मी दिखाकर इतना सामान खरीद लेता है कि उसे बाद में अफसोस होता है अर्थात् ~~व~~ जेब भरे होने और मन के खाली होने से व्यक्ति बाजार के आकर्षण में फँस जाता है।

(पाठ का नाम – बाजार दर्शन
लेखक का नाम – जैनेन्द्र कुमार)